Saathi

Date ___/___/___

भौगोलिक चिन्तन के विकास

इरैटोस्थनीज (२७6 – 194 B.C)

इरैटोस्थनीज का जन्म लीबिया के उत्तरी तट पर यूनानी उपनिवेश साइरेन नामक स्थान पर हुआ था। उन्होने भौगोलिक ज्ञान को वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित क्रमवद्ध ज्ञान के रूप मे विकसित किया उसे व्यवस्थित भूगोल का जनक कहा जाता है।

(1) भौतिक भूगोल – इरैटोस्थनीज ने एशिया मे स्थित पर्वतमाला को टारस कहा जो गलत था उन्होने यह भी बताया कि भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित हिमालय पर्वत भारतीय काकेशस कहलाता है उन्होने गंगा नदी फारस की खाड़ी लाल सागर और नील नदी के निचले भागो का भी वर्णन किया

गणितीय एवं भौतिक भूगोल –

इरैटोस्थनीज ने एशिया मे स्थित पर्वत माला को टारस पृथ्वी को गोलाकार बताया तथा उसे ब्रह्माण्ड के मध्य मे भी बताया। उन्होने सर्वप्रथम गणना के आधार पर पृथ्वी का आकार एवं उसकी परिधि ज्ञात की। उन्होने अटलाण्टिक महासागर के तट से पृथ्वी तट तक की लम्बाई 78,000 स्टेडिया तथा दक्षिणी लीबिया के जिनमोन से थुल तक की चौड़ाई 38,000 स्टेडिया बतायी उन्होने यह भी बताया की पृथ्वी के ब्रह्माण्ड के मध्य मे स्थित होने से सभी आकाशीय पिण्ड

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

गणितीय भूगोल- टालेमी ने प्रक्षेपों की रचना करके उसके लिए समान्य दिशा निर्देश दिये। टालेमी ने शंक्वाकार प्रक्षेप के रूपान्तरित किया तथा ध्रुवीय क्षेत्रों के लिए त्रिविम प्रक्षेपों का प्रयोग किया। लम्बकोणीय प्रक्षेप के आधार पर उन्होंने पृथ्वी को तीन प्रकार के प्रदर्शित किया-

① क्षैतिजीय तल
② देशान्तरीय तल
③ लम्बवत् तल

खगोलकी पर कार्य- अलमागेस्ट नामक ग्रन्थ के प्रत्येक खण्ड में नक्षत्रों से सम्बंधित कुछ न कुछ तथ्य मिलते हैं। उन्होंने पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के मध्य में माना तथा इसे स्थिर माना। अन्य आकाशीय पिण्ड पृथ्वी का चक्कर पिण्ड अपने निश्चित मार्ग पर परिक्रमा करते हुए पृथ्वी के चारों ओर घुमते हैं। ग्रहों के अण्डाकार परिभ्रमण के कारण ही उसमें भिन्नता पायी जाती है।

अक्षांश एवं देशान्तरों का प्रयोग- यद्यपि 125 ई० पू० हिपारकस ने यह बताया था कि पृथ्वी में मानचित्रों को वैज्ञानिक ढंग से प्रदर्शित करने के लिए पृथ्वी के निर्देशांकों का ज्ञान होना आवश्यक है। उन्होंने पृथ्वी को हिप्पारकस के आधार पर 180° अक्षांश एवं 360° देशान्तर में विभाजित किया। उन्होंने भारत को 110° पूर्वी देशान्तर से 150° पूर्वी देशान्तर तक बताया।

प्राचार्य
...री मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

प्रादेशिक भूगोल – टॉलेमी ने अपने ग्रन्थो मे ज्ञात विश्व भौगोलिक विवरण प्रस्तुत कर प्रादेशिक भूगोल के विकसित किया। इन्होने यूरोप एशिया और लिबिया के बारे मे जानकारी प्रस्तुत की

यूरोप – उन्होने यूरोप मे ब्रिटिश द्वीप समूह का वर्णन किया है। भूगोल के बारे मे भी लिखा उन्होने गाल स्पेन (हिस्पानिया) का भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत किया उन्होने अपने विवरणो मे. ल्यायर शेन सीन अटर तथा गेरोन का उल्लेख किया उन्होने शेन नदी को आल्पस पर्वत से निकालकर दक्षिण की ओर बहाकर भूमध्य सागर मे गिरता हुआ बताया। जर्मनी के बारे मे उनका ज्ञान अधिक शुद्ध था। टालेमी को आयरलैण्ड का भी ज्ञान था

एशिया – एशिया के मध्य मे एक विशाल पर्वत श्रृंखला का उल्लेख किया जिसे इमाउस इमोडस क्रम कहा जो वर्तमान मे हिन्दूकुश हिमालय कराकोरम क्युनलुन पर्वतीय क्रम के रूप मे जाना जाता है। उन्होने गंगा नदी की उत्पत्ति के बारे बताया उन्होने गंगा की खाड़ी का भी विवरण दिया उन्होने गंगा नदी की उत्पत्ति के बारे मे बताया। टालेमी ने पामीर के उत्तर पूर्व तथा पूरब मे स्थित पर्वत श्रेणियों का भी उल्लेख किया

लीबिया – अफ्रीका के उत्तरी भागो के बारे मे टालेमी को अधिक जानकारी उन्होने सिकन्दरिया एवं लाल सागर तथा इथोपिया

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

सागरो के तट पर स्थित देशो का वर्णन किया उन्होने मध्य अफ्रिका के इथियोपिया आन्तरिक एवं इसके दक्षिणी भाग को एगीसियम्बा कहा

टॉलमी का प्रभाव - टालमी के इसे टेप्रोबेन कहा उन्होने हिंद महासागर को आन्तरिक सागर माना गया उन्होने अफ्रीका के पुर्वी भाग को पूरब मे लम्बा के दक्षिणी पुर्वी एशिया के मध्य मे इमाउस इमोड्स नामक विशाल पर्वत श्रखला को दर्शाया है जो वर्तमान हिन्दुकुश हिमालय कराकोरम क्युनलुन पर्वतीय क्रम है उन्होने नील नदी की मोण्टेस पर्वत से निकलता बताकर उसे उत्तर से दक्षिण की ओर बहता हुआ दिखाया -

जब कोलम्बस को यह मालूम हुआ कि एशिया महाद्वीप का विस्तार पुर्व की ओर बहुत दूर तक फैला हुआ है कोलम्बस अरब तो नही पहुँच सके अपितु उन्होने अमेरिका का खोज कर ली टॉलमी ने हिंद महासागर ने दक्षिण मे एक महाद्वीप की कल्पना की थी। जिसे 18 वी शताब्दी मे कैप्टन कुक ने खोज निकाला था लगभग 17 वीं शताब्दी तक टालमी की खगोल की ग्रन्थमाला अलमाजेस्ट ने भूगोल की ग्रन्थमाला ज्योग्राफिया ने तथा मानचित्रो ने भूगोल जगत मे पुर्ण सम्मान पाया 18 वी शताब्दी की खोजो ने उसकी अशुद्धियो को प्रकट किया

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.